ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-11* December (Supplementary Issue)-2017
Innovation The Research Concept

# शिवमूर्ति की कहानियों में स्त्री प्रतिरोधी स्वर

**प्रमोद कुमार प्रसाद**
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
जे.के.कॉलेज,
पुरुलिया, पश्चिम बंगाल

**सारांश**

भारतीय समाज पितृसत्तात्मक समाज है, जहाँ पुरुष की इच्छाएं, महत्वाकांक्षाएं ही सर्वोपरि मानी जाती है। लेकिन वर्तमान समय में शिक्षा के प्रचार–प्रसार के साथ स्त्रियों के चिंतन, उनकी सोच में विकास हुआ। स्त्रियाँ अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग हुई हैं। गौरतलब बात यह है कि स्त्रियों में यह सजगता केवल शहरों तक ही सीमित नहीं रहा, गाँवों में भी इसके स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलते हैं। यह सत्य है कि शहरी स्त्रियों में शिक्षा और आत्मनिर्भरता की अधिकता के कारण जिस परिमाण में सजगता आयी है, सीमित शिक्षा, आत्मनिर्भरता की कमी एवं सामाजिक जड़ता के कारण गाँवों की स्त्रियों में उस परिमाण में सजगता नहीं आ पायी है बावजूद इसके अपने सीमित शिक्षा और सीमित आत्मनिर्भरता में भी ग्रामीण स्त्रियों अपने अधिकारों और अपनी अस्मत की रक्षा के प्रति सजग हुई हैं। पुरुष की शोषण नीति और उनकी भोगवादी प्रवृति के प्रतिरोध में उठ खड़ी हुई हैं। शिवमूर्ति ने अपनी कहानियों में इसी सत्य से हमें परिचित कराया है । चाहे वह 'अकाल दंड़' की सुरजी हो या 'कसाईबाडा' की शनीचरी हो या फिर 'तिरिया चरितर' की विमली। शिवमूर्ति के ये सभी स्त्री पात्र अपने ऊपर होने वाले पुरुषों के जबरन अधिकार का पुरजोर विरोध करती हैं।

**मुख्य शब्द :** स्त्री शोषण, स्त्री प्रतिरोध ।

**प्रस्तावना**

शिवमूर्ति अवध की जमीन से जुड़े हुए रचनाकार हैं। इन्होंने बहुत कम पर विशिष्ट लिखा है। ग्रामीण जीवन से जुड़े यथार्थ को अपनी कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। मूल रूप से इनका एक ही कहानी संग्रह है केशर कस्तूरी। इसमें छः कहानियाँ संगृहीत हैं। शीर्षक से लेकर अंतर्वस्तु तक में दलित स्त्री रची–बसी है। इन कहानियों के माध्यम से उन्होंने न केवल पाठकों को आकर्षित किया प्रत्युत साहित्य जगत में कई बहसों को भी जन्म दिया।

शिवमूर्ति की कहानियों में दलित स्त्री विशेष रूप में विद्यमान हैं। वह उनकी समस्याओं से पाठकों को रूबरू कराते हैं, समाज में चली आ रहीं कुरीतियों का पर्दाफाश करतें हैं। गाँवों में ऐसी कुरीतियाँ अभी भी चली आ रहीं हैं। गाँवों की राजनीति दिन–प्रतिदिन गन्दी होती जा रही हैं। टोपियों का फ़क है, खोपड़ियाँ सब एक हैं। दिमाक में शोषण की इच्छा एक–सी है। अभी भी गाँवों में जात–पात के नाम पर छुआछूत और शोषण जारी है। दलितों के बहन–बेटियों के इज्जत के साथ खेला जाता है। सिर्फ इसलिए की वे दलित हैं। शिवमूर्ति की कहानी 'कसाईबाड़ा' और 'अकाल–दण्ड' में भी कुछ ऐसा ही होता है। शहर गाँवों का शोषण करते हैं और गाँव दलितों का। इस सम्बन्ध में वभैव सिंह लिखते है कि – "उन्होंने शहरों में आधुनिकता के संकटों को देखने के स्थान पर गाँवों में आधुनिकता के अभाव को देखा। इसी तरह उन्होंने गाँवो को केवल खेतिहर किसान का पर्याय समझने के बजाय ग्रामीण संरचना में शामिल कई अन्य पक्षों जैसे स्त्री –जीवन, जातिवाद, सरकारी भ्रष्टाचार और आपसी ईर्ष्या आदि को कथानकों का आधार बनाया।"[1]

**साहित्यावलोकन**

उत्तर भारत के ग्रामीण जनजीवन, किसानों, मजदूरों,दलितों तथा स्त्रियों की दयनीय स्थिति, शोषण एवं दमन को प्रभावशाली ढ़ंग से चित्रित करने वाले कथाकार शिवमूर्ति का समकालीन कथाकारों में महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने लगभग आठ–दस कहानियाँ और तीन लघु उपन्यास लिखे। परिमाण में कम होते हुए भी इनकी रचनाएँ अपनी गुणवता बनाये हुए है। समकालीन जिन कथाकारों ने नारी जीवन की त्रासदी को अपनी रचनाओं में स्थान दिया उनमें शिवमूर्ति अन्यतम हैं। शिवमूर्ति के स्त्री चित्रण का अपना एक अलग दृष्टिकोण है जो उन्हें अपने समकालीन कथाकारों में एक अलग स्थान दिलाता है। शिवमूर्ति की

कहानियों के केन्द्र में आज की पढी–लिखी, जागरूक, पुरुष–समाज से बराबरी का दर्जा पाने के लिए प्रतिस्पर्धा करती, सामाजिक व बौद्धिक स्तर पर अपनी अस्मिता की रक्षा करने के लिए आर्थिक व राजनीतिक ताकत जुटाती, अपने यौनिक अधिकारों के लिए सतर्क, द्रलोक की नारी नहीं है बल्कि उनके यहाँ निम्न मध्यवर्गीय औरतों के शरीर व आत्मीक सौंदर्य, दैहिक ताप व उत्पीड़न, जिजीविषा, प्रतिरोध, राग–द्वेष, पारिवारिक क्लेश पर केन्द्रित वे नारियाँ हैं जो दूरदराज की गाँवों में घर–दीवार की सीमाओं में कब्द होकर अपना जीवन गुजार रहीं हैं ।

**अध्ययन का उद्देश्य**

शिवमूर्ति की कहानियों की स्त्री गरीबी और अभावों के बीच जीते हुए भी नारी अस्मिता के प्रति सजग हैं। इनकी कहानियों के अधिकांश स्त्रियां गरीबी, बाल–विवाह के कारण उत्पन्न सामाजिक विषमताओं व पुरुष–समाज के बलात्कारी आचरण से त्रस्त हैं, किन्तु अन्य स्त्रियों के समान वह इसे अपनी नियति न मानकर यथा सम्भव इन सब के प्रति विद्रोह करती नजर आती हैं। आर्थिक, सामाजिक, शारीरिक एवं मानसिक शोषण का प्रतिरोध करना ही शिवमूर्ति की कहानियों में स्त्रियों का मुख्य उद्देश्य रहा है।

प्रतिरोध का स्वर यूं तो उनकी कहानियों में सर्वत्र बिखरे पड़े हैं पर 'कसाईबाड़' ,'अकाल दण्ड', 'तिरिया चरितर' में प्रतिरोध के स्वर व्यापक धरातल पर उभर कर आये हैं । प्रतिरोध का यह स्वर कहीं एक माँ के माध्यम से तो कहीं एक पत्नी के माध्यम से, कहीं एक सामान्य अबला के माध्यम से और कहीं एक बहू के माध्यम से व्यक्त हुआ है। 'कसाईबाड़ा' कहानी की नायिका शनीचरी एक अनपढ़, गरीब व शोषण की शिकार स्त्री है। उसकी बेटी रूपमती को ग्राम प्रधान ने सामूहिक विवाह कार्यक्रम के बहाने पैसा लेकर शहर के एक आदमी को वेश्या–वृति कराने के लिए बेच दिया है। लीडर जी द्वारा इस बात की जानकारी मिलने के बाद शनीचरी अकेले होते हुए भी प्रधान के विरुद्ध मोर्चा खोल देती है –"मोर बिटिया वापस कर दे बेईमनवा, मोर फूल ऐसी बिटिया गाय–बकरी के नाई बेचि के तिजोरी भरै वाले! तोरै अंग–अंग से कोढ़ फूटि कब बदर–बदर चूई रै कोढ़िया.....!"[2] जब प्रधान दरोगा की शहपाकर शनिचरी को अनशन स्थल से उठा फेंकना चाहता है तब प्रधान के दमन का सीधा विरोध करती हुई शनिचरी उसे चुनौती देती है। सहसा उठकर खड़ी होती है वह और आकर बिल्डिंग का दरवाजा खटखटाने लगती है–"अरे आ रँडवा, खोल केवड़वा।"[3] यहाँ शिवमूर्ति ने शनिचरी का जो रूप प्रस्तुत किया है, वह आत्मविश्वास से भरा एक स्त्री का ही रूप है।

अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध की यह प्रवृति सिर्फ शनिचरी तक ही सीमित नहीं रहती बल्कि प्रतिरोध का यह स्वर परधानिन और लीडराइन के स्वरों में भी स्पष्ट सुनाई पड़ती है।प्रधान के अत्याचारी गतिविधियों के विरुद्ध परधानिन के प्रतिरोध का जो दृश्य कहानीकार ने खींचा है वह कम तीक्ष्ण व कम धारदार नहीं है–"ई गाँव लंका है। इहाँ लंका दहन होवेगा। रावन तू ही हो। लीडर बना है भिभीखन। तोहरे दूनों के चलते गाँव का सत्यानाश होवेगा। होई रहा है। बहिन–बिटिया बेंचो। हमहूँ का बेचि लेव। रुपया बटोरो। साथ लै जायेब, लेकिन अब हम एहि घरे मा ना रहब।"[4] इसी प्रकार जब लीडरजी मुख्यमंत्री को निवेदन देने के बहाने धोखे से अनपढ़ शनिचरी के दस्तखत कोरे स्टाम्प पेपर पर कराकर उसकी जमीन हड़प लेता है तब उसके चालाकी भरी गतिविधियों से त्रस्त हो लीडराइन विद्रोह कर बैठती है–"धोखेबाज, बेईमान । तुम्हारे ही पाप के कारण मेरी कोख नहीं फल रही है। मैं....।"[5] फिर जब लीडरजी उसे समझाने व मनाने की कोशिश करते हैं तो लीडराइन का गुस्सा अपने चरम पर पहुँत जाता ै– "तुम लोग कसाई हो। सारा गाँव कसाईबाड़ा है। मैं नहीं रहूँगी इस गाँव में।"[6]

समाज में गरीब एवं दलित स्त्रियों के प्रति एक आमधारणा सदा से रही है कि उनमें अपने स्त्रीत्व की रक्षा को लेकर कोई सजगता नहीं होती है । वे थोड़े से प्रलोभन में अपने को सौंप देती हैं। शिवमूर्ति के कहानीकार ने इस धारणा का खण्डन कर दलित और गरीब समाज की स्त्रियों को एक सम्मान प्रदान किया है। 'अकाल–दंड' कहानी में राहत– सामग्री बँटवाने वाला इलाके का सिकरेटरी वासना में अंधा हो मेहनत–मजूरी कर अपना व माई का पेट पालने वाली सुरजी के देह को भोगना चाहता है। इसके लिए वह बार–बार सुरजी को प्रलोभन देता है। किन्तु सुरजी उसके प्रलोभन में नहीं आती है। वह बड़ी निर्भीकता से उसका विरोध करती है। सिकरेटरी की काली छाया आगे बढ़ते देख गुर्राती है– "सुरजी, ख–आन....खबरदार जो आगे बढ़ा। वह दूसरे कोने की ओर पिछड़ती जा रही है, मुँह झौंसि देब दहिजार के पूत।"[7] इतने पर भी जब सिकरेटरी नहीं मानता है और वह जोर–जबर्दस्ती पर उतर आता है तब सुरजी पूरी शक्ति से उसका विरोध करती है । यहाँ पर कहानीकार ने सुरजी के माध्यम से स्त्री–प्रतिरोध का जो रूप प्रस्तुत किया है, वह अद्भूत बन पड़ा है –"चार ही लतेरे में उनका भाँग का नशा गायब हो जाता है। लात का पक्का धक्का पिछवाड़े लगता है तो औंधे मुँह जाकर बाँस के चौखट से टकराते हैं। आगे के दोनो दाँत–घोड़ – दंत निकल भागे। बाप रे ! उठकर खून थूकने तक की ताब नहीं। पड़े–पड़े उसी तरह हाँफ रहे हैं।"[8] शिवमूर्ति लिखते हैं कि सुरजी का क्रोध इतने भर से शांत नहीं होता और फिर गुर्राती हुई सुरजी कहती है–"लमानसी चाहौ तो अब चुप्पै भाग जाव। नाहीं त अबही गोहार लगाय देब त तोहार द्दरा (द्रता) उतरि जाए।"[9] इस कहनी का अंतिम दृश्य पुरुष–अत्याचार के विरुद्ध होने वाले एक अबला स्त्री के संघर्ष को जिस चरम गंतव्य तक हमें ले जाता है,वह बेमिसाल है –"सिकरेटरी के तम्बू के अंदर–बाहर भीड़ जमा हो गई है। अंदर का दृश्य बड़ा भयानक है। सिकरेटरी बाबू पलंग पर नंग– धड़ंग पड़े छटपटा रहे हैं। सुरजी ने हंसिये से उसके देह का नाजुक हिस्सा अलग कर दिया है और पिछवाड़े के रास्ते भागकर अँधेरे में गुम हो गई है।"[10] यहाँ सुरजी न केवल बलात्कारी को दण्ड देती है बल्कि वह विद्रोह और विरोध की एक नई संस्कृति का सृजन करती है।

तिरिया चरितर की जवान हो रही विमली जब धीरे–धीरे काम–पिपासु लोगो की हरकतों का शिकार होने

लगती है, तो अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए उसके भीतर प्रतिरोध के स्वर भी मुखर होने लगते हैं। भट्ठे पर साथ काम करनेवाला बिल्लर जब एक दिन उसके साथ छेड़छाड़ करता है, तो वह उसे फटकार लगाती हुई कहती है– "ए बिलरु! बड़ी बदमाशी सूझती है – हट !"[11] इतने पर भी जब बिल्लर नहीं मानता तब वह उसे नसीहत भी देती है –"अरे–अरे ! मनई जैसा चल!"[12] बिल्लर उसके मन के चोर को पहचानता है। इसी का फायदा उठाकर उसे दबाव में लेने का प्रयास करता है। वह विमली को व्यंग्यात्मक लहजे में कहता है –"डरेवर बाबू की देह महकती है और मेरी गंधाती है?"[13] पर विमली उसके इस कटुक्ति से न तो घबराती है और न ही सकुचाती है। वह दो टूक जवाब देती है –"रमकल्ली के तार ! न तू हमारा बियहा हो न डरेवर बाबू। खबरदार !"[14] इसी प्रकार जब विमली का ससुर बेटे की अनुपस्थिति में उसका यौन शोषण करना चाहता है तब विमली उसके इरादे को भापते हुए अपनी इज्जत बचाने के लिए जिस तरह संघर्ष करती है वह अपने आप में एक नजिर है। विमली के इस प्रतिरोध का चित्रण शिवमूर्ति ने बड़े ही प्रभावशाली ढंग से किया है–"दोनों पैर सिकोड़कर ऐसा सधा बार किया छाती पर कि बिसराम उताने दूर जा गिरा खटिया से। तब से छाती और सिने में भयानक दर्द !"[15] किन्तु इस आघात से बिसराम सचेत नहीं होता बल्कि विमली के देह को भोगने के लिए वह अन्य रास्ता अख्तियार करता है। कहानीकार यहाँ यह संकेत करना नहीं भूलता है कि जब पुरूष बल से नहीं जीत पाता है तो छल का सहारा लेता है। बिसराम भी बल से नहीं जीत पाने पर छल का सहारा लेता है। एक दिन वह धोखे से पंचामृत में नशीला पदार्थ मिलाकर उसकी इज्जत लूट लेता है। सब कुछ लुट जाने के बाद भी विमली हताश नहीं होती है। उसके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला और ड़क उठती है। सहसा रूलाई गायब हो जाती है। "बुझी–बुझी आँखों में चमक उभरती है। इस प्रतिशोध का चित्रण शिवमूर्ति बड़े ही प्रभावशाली ढँग से करते हैं। यथा– सारी गंदगी, बदबू, छल और धोखा जलाकर राख कर देगी वह। और कोई राह नहीं।"[16] वह पंचायत के समक्ष बड़ी निर्भीकता से सच का बयान करती है –

"तू मिट्टी के तेल की बोतल और माचिस लेकर विसराम की मड़ई में गई थी, यह सच है कि झूठ ?

सच है?

क्यों गई थी?

गई थी इसे मिट्टी का तेल डालकर फूँकने।

काहे?

क्योंकि रात मेरी झोपड़ी में दारू पीने वाला , मछली खाने वाला और मेरे साथ मुँह काला करने वाला जानवर यही था। मैं इसे जिन्दा जलाना चाहती थी लेकिन यह बच गया। अब मैं इसका कच्चा मांस खाऊँगी।"[17]

विमली एक जीवट और निर्भीक महिला है। वह शुरु से ही खूँखार नर पशुओं से अपने को बचाती आयी है और साथ ही उनका मुँह तोड़ जवाब भी देती आयी है। इस सन्दर्भ में ओमप्रकाश बाल्मीकि का कथन सटीक दिखाई पड़ता है –"पंचायती राज के नाम पर स्त्रियों और दलितों का शोषण आम बात हो गई है जिसे शिवमूर्ति अपनी कहानियों में पुरजोर ढंग से उठाते है।"[18] वह पंचायत के सामने बड़े निर्भीकता से सच का बयान करती है। लेकिन पंचायत को सच कहाँ सुनना है। वहाँ तो पहले से ही निर्धारित है एक फैसला, जिस पर पंचायत को सिर्फ मूहर लगानी है। तिरिया–चारितर की विमली अपने ससुर से बदला नहीं ले पाती अपितु वह खुद पंचायत के निर्णय का शिकार होती है गाँव के पंच उसको तिरिया–चरितर घोषित करके उसके सिर में दाग देते हैं यह वही पंचायत जिसके बारे में प्रेमचंद ने एक आदर्श छवि प्रस्तुत करते हुए' पंच परमेश्वर' जैसी कहानी लिखी थी लेकिन आज पंचायत का यह रूप बदल गया है आज की पंचायत केवल शक्ति और सामर्थ वालों की है उसके पास सच सुनने और सच कहने की ताकत नहीं है तभी तो उस पंचायत पर विमली को रोसा नहीं है तभी तो वह पंचायत के फैसले के प्रति विरोध प्रकट करते हुए कहती है –"मुझे पंच का फैसला मंजूर नहीं । पंच अंधा है। पंच बहरा है। पंच में गवान का 'सत' नहीं है। मैं ऐसे फैसले पर थूकती हूँ –आ–क्–थू....! देखूँ कौन माई का लाल दगनी दागता है।"[19] इस सन्दर्भ में महेश कटारे की यह टिप्पणी अत्यन्त समीचीन प्रतीत लगती है –"तिरिया चरित्तर की विमली जो बड़ी हिम्मत और जतन से स्वयं को अपने अनदेखे पति के लिए सुरक्षित रखती है, अपने ही ससुर के धार्मिक कपट और वासना का शिकार हो, दण्ड भोगती है किन्तु वह प्रतिरोध भी करती है यही प्रतिरोध उसे प्रेमचंद की धनिया, नागार्जुन की उग्रतारा या रांगेय राघव की गदल से जोड़ता है।"[20]

शिवमूर्ति सीमित दायरे से निकलकर व्यापक फलक पर स्त्री संवेदना को विश्लेषित करते हैं। यह जरूरी नहीं है कि औरतों का यौन–शोषण हो, तभी वह शोषित होती हैं। यौन शोषण के इतर घर का मर्द जब अपनी लालच में अंधा हो अपनी औरतों का अपने स्वार्थ के लिए किसी भी बेजा रूप में इस्तेमाल करता है, तो वह शोषण का एक घिनौना रूप ही कहलाता है। स्त्री शोषण के इस घिनौने रूप को शिवमूर्ति अपनी कहानियों के माध्यम से हमारे सामने लाते हैं। 'कसाईबाड़ा' कहानी में इस बात का प्रमाण स्पष्ट देखने को मिलता है। दरोगा, परधान, लीडर सभी अपनी पत्नियों का इस्तेमाल अपना मतलब साधने के लिए करते हैं। दरोगाईन लीडर को पकौड़ा खिलाती है तो लीडर अपनी पत्नी के हाथ का बना मीट दरोगाजी को परोसते हैं। प्रधान इन सबसे चार कदम आगे नजर आते है। वह अपनी पत्नी का इस्तेमाल शनिचरी को मरवाने के लिए करता है। इस प्रकार लेखक यहाँ स्पष्ट कर देता है कि स्त्रियों के शोषण के प्रति पुरूष समाज के दृष्टिकोण में कोई विशेष बदलाव नहीं आया है। समाज का रक्षक कहे जाने वाले ही किस प्रकार से स्त्रियों का शोषण कर रहे हैं।

**निष्कर्ष**

शिवमूर्ति की कहानियों में स्त्री प्रतिरोध को देखते हुए निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि स्त्री के प्रति उनकी सोच बड़ी स्पष्ट है शिवमूर्ति की कहानियों की स्त्रियाँ पुरुष प्रधान समाज के क्रूर निर्णयों का शिकार होती है, लेकिन वह अपने साथ स्वतंत्रता और अस्मिता

जैसे बड़े सवाल उठाने के साथ संघर्षशील स्त्री की प्रतीक बन जाती है। शिवमूर्ति इन कहानियों के माध्यम से पुरुष समाज के दकियानुसी सोच पर कुठाराघात करते हैं साथ ही स्त्रियों में एक नई चेतना जागृत करने की कोशिश भी करते हैं। स्त्री प्रतिरोध का जैसा स्पष्ट स्वर उनके कहानियों में मिलता है वैसा स्त्री विमर्श के संपूर्ण कथा–साहित्य में बहुत कम देखने को मिलता है। समाज में स्त्री के स्थान, स्त्री के अधिकारों, स्त्री के आर्थिक अवस्थाओं पर चिंतन और इन तमाम चिंतनों के द्वारा पुरूष के समकक्ष स्त्री को उसकी संपूर्ण गरिमा के साथ स्थापित करने का भरसक प्रयास शिवमूर्ति ने किया है। साथ ही समाज के सामने यह सवाल खड़ा करना कि इस अंधी न्याय व्यवस्था के कारण और कितने दिनों तक सुरजी, शनीचरी और विमली जैसी हजारों स्त्रियों की इज्जत की धज्जियाँ उड़ाई जाती रहेंगी।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *शताब्दी का प्रतिपक्ष, सं. वैभव सिंह , आधार प्रकाशन पंचकूला (हरियाणा),प्रथम संस्करण – 2013 , पृ–145*
2. *शिवमूर्ति – केशर कस्तूरी , राधाकृष्ण प्रकाशन , नयी दिल्ली ,संस्करण– 2007 , पृ–8*
3. *शिवमूर्ति – केशर कस्तूरी , राधाकृष्ण प्रकाशन , नयी दिल्ली ,संस्करण– 2007 , पृ–22*
4. *शिवमूर्ति – केशर कस्तूरी , राधाकृष्ण प्रकाशन , नयी दिल्ली ,संस्करण– 2007 , पृ–23*
5. *शिवमूर्ति – केशर कस्तूरी , राधाकृष्ण प्रकाशन , नयी दिल्ली ,संस्करण– 2007 , पृ–26*
6. *शिवमूर्ति – केशर कस्तूरी , राधाकृष्ण प्रकाशन , नयी दिल्ली ,संस्करण– 2007 , पृ–26*
7. *शिवमूर्ति – केशर कस्तूरी , राधाकृष्ण प्रकाशन , नयी दिल्ली ,संस्करण– 2007 , पृ–39*